2018-19

Impact Factor 6.261 **ISSN- 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mr. Bharati Sonawane - Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)
Dr. Munaf Shaikh, Jalgaon (Urdu)

RESEARCH JOURNEY

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

Scanned with CamScanner

धर्मकासत्यस्वरूप- एकमंथन

डॉ. भारती एस. आर
एम. ए. नेट (संस्कृत), योग,आयुर्वेद एवं निसर्गोपचार विशेषज्ञ, जवाहर महाविदयालय अणदुर, ता. तुळजापूर जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावनाः-

हाँ लेखनि। हृत्पत्र पर लिखनी तुझे है यह कथा,
दृक्कालिमा में डूबकर, तैयार होकर सर्वथा।
स्वच्छन्दता से कर तुझे करने पड़े प्रस्ताव जो,
जग जाये तेरी नौंक से सोये हुए हों भाव जो।।

(भारत-भारती)

वेद भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं । ये मानवजाति के लिये प्रकाश स्तम्भ है । विश्व को धर्म और संस्कृति का ज्ञान देने का श्रेय वेदों को है। वेद ही विश्व-शान्ति, विश्वबन्धुत्त्व और विश्व कल्याण के प्रथम उद्बोधक है । वेदों ने ही मानव जाति की समुन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। वेद ज्ञान के अथाह भंडार हैं।

"विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते एभिर्धर्मादि –

सम्प्रति धर्म की दयनीय अवस्था का अवलोकन करते हुए इन पंक्तियों का विस्फोट स्वभाविक है

धर्म कागज का खिलौना बन गया ।
चंद बूदें गिर पड़ीं और गल गया

पुरूषार्था इति वधर्म को मानव जाति के अहित एवं अनिष्ट का साधन बनाया गया है। धर्म के नाम पर मानव मानव में वैमनस्य पैदा किया है। एवं हिंसा भडकाई गई है। समाज में धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की कुरीतियों एवं अन्ध विश्वासोंका बीज बोया गया है। इतना ही नही प्रक्षेप के व्दारा धर्म ग्रन्थौं को कलंकित भी किया गया है। आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक स्वरूप उसकी उपादेयता एवं आवश्यकता का व्यापक स्तर,पर प्रचार एवं प्रसार किया जाये, जिससे अज्ञानी लोगों को विनाश के गर्त मे गिरने से बचाया जा सके । धर्म के महनीय तत्वों की सार्थकता तभी है जब उसके सत्य स्वरुप को जाना जाये और तदनुकूल आचरणकिया जाये।

शोधनिबंधकाउद्देशः-

धर्मकीवास्तविकताजाननाएवंविकृतस्वरूपकोपरिषकृतकरना | समाजमेंएकता, समता, शान्ति, सौहार्द, स्वानुभूती, औदार्य, विश्वबंधुत्व,सभ्यता, संस्कार, संस्कृती, समृद्दी, मानवता, आत्मियता, आदि.धर्मकेइनउदाततात्वोकोंविश्वकेसमक्षप्रस्तुतकरनाहै |

विषयविषदिकरनः-

यह मानव जाति का सबसे बडा दुर्भाग्य रहा है कि धर्म को सदा धर्ममार्तडो ने विकृत रूप में प्रस्तुत किया है। उसके उदात्त सत्य स्वरूप को छिपाया गया है।

धर्मकीपरिभाषाः

जिन सत्कर्मों से इहलौकिक तथा पारलौकिक उन्नति होती है उन सभी उत्तम कार्यों को वैदिक वाङ्मय में धर्म कहा गया है। वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद ने प्रथम अध्याय के द्वितीय सूत्र में यह स्पष्ट किया है कि धर्म किसे कहते हैं

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिःस धर्मः (वै.द.प्र.अ.सू.२) पृ.५३ "२

चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः (पूर्वमीमांसा-जैमिनि दर्शन १-१-२) (सूत्र २)

इसी तथ्य को समक्ष रखकर विश्वधर्म का स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। महर्षि मनु ने धर्म को दर्शविध कहा है ।

तिक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्यासत्यमक्रोधःदशकं धर्म लक्षणम्।। (मनुस्मृति-अ.६-९२ पृ.२९०) धृतिः-सदा धैर्य रखना, क्षमा- : निन्दा

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad
122
Scanned with CamScanner

स्तुति, मानापमान हानिलाभ आदि दुःखों में सहनशील रहना, दम- मन को सदैव उत्तमको में मग्न रखना, अस्तेय'-चोरी न करना, अर्थात् बिना

आज्ञा के छल, कपट द्वारा परपदार्थ को स्पर्श करना चोरी कहाता है। शौचम-राग, द्वेष पक्षपात छोड़कर अभ्यंतर अशुद्धि को दूर करना, और जल फेनिल आदि से बाह्य पवित्रता रखना, ६ इन्द्रिय निग्रहः- अपनी कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना। 'धी :- मद्यादि मादक द्रव्य जो कि बुद्धिनाशक हैं, उनका सेवन कभी न करना, दुर्जनों की

संगति से दूर रहना, सदा सज्जनों के निकट निवास करना, आलस्य प्रमाद आदि का त्याग करके सदेव बुद्धिवर्धक दुग्धदधिधृतादि द्वारा पुष्ट होकर योगाभ्यास ब्रह्मचर्य पालन आदि श्रेष्ठ कर्म करना अर्थात सदसद विवेक के साथ जीवन यापन करना, धी का कार्य है। विद्याः- पृथ्वी से लेके परमेश्वर परमाणु तक सभी प्रकार का यथार्थज्ञान और उन से लाभ लेना। सत्यमः- जैसा आत्मा में वैसा मन में, जेसा मन में वैसा वाणी में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में सत्याचरण करना। अक्रोध :- क्रोधादि दोषों को त्यागकर शान्त्यादि गुणों को ग्रहण करना, इन दस तत्वों को धर्म कहा है। सत्यार्थ प्रकाश – मधि सानन् त। 1. धर्म का स्वरूप : भौतिक उन्नति के साथ मानव की आध्यात्मिक उन्नति भी अत्यावश्यक है। मनुष्य में केवल देह और बुद्धि ही नहीं अपितु आत्मा भी है। वह न केवल देह की आकांक्षाओं की पूर्ति और बौद्धिक जिज्ञासाओं की तृप्ति चाहती है अपितु आत्मोन्नति किये बिना उसे सन्तुष्टि नहीं मिलती है। जिस प्रकार देह के बिकास के लिए भोजन की, बुद्धि के विकास के लिए ज्ञान की आवश्यकता है उसी प्रकार आत्मा के विकास के लिए धर्म अर्थात् सत्कों की आवश्यकता है। धर्म सन्मार्ग का प्रेरक एवं संरक्षक है। धर्म के द्वारा ही मानव अपने ज्ञान, क्रिया एवं भावना से सम्बन्धित सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के चरम आदर्शों का सम्पादन कर सकता है। धर्म के बिना मानव कदापि पूर्णता को नहीं पा सकता। धर्म नीति का प्राण है। वह मनुष्य को नीति और सदाचार की ओर ले जाता है। वह मानव समाज का नियामक है। विश्व का कोई भी धर्म ऐसा नही है जिसने सदाचार का पाठ न पढ़ाया हो। विश्व धर्म की संकल्पना :- धर्म का तात्पर्य है सन्मार्ग। वेद, उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण, आरण्यक, वेदाङ्ग स्मृतिग्रन्थ, सूत्रग्रन्थादि में धर्म की संकल्पना इस प्रकार है- : यहीविश्वधर्म का स्वरूप है।

स्वरूप

- अहिंसा।
- सत्य ।
- अस्तेय।
- ब्रह्मचर्य ।
- अपरिग्रह ।
- शौच।
- सन्तोष ।
- तप ।
- स्वाध्याय ।
- ईश्वरप्रणिधान।
- परिश्रम।
- सद्भाव
- समता।
- स्नेह।
- सौहार्द।
- औदार्य।
- विश्वबन्धुता।
- विश्वशान्ति।
- विश्वारोग्य।
- विश्वकल्याण।
- सात्विक आहार।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

Scanned with CamScanner

- सदाचार।
- एकता।
- आत्मचिन्तन।
- गोरक्षण।
- अक्षक्रीडा निषेध।
- मद्यपान निषेध।
- अहिंसा परमो धर्म : ।
- न हि सत्यात्परो धर्मः नानृतात्पातकं महत्। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.४७६)
- सत्यमेव जयते नानृतम्। (मु.उ.उ. अंक पृ २८८) (सत्यार्थ पृ.४७६) ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्यलाभः (सू- ३८ ष) अपरिग्रह स्थैरये जन्मकथन्तासम्बोधः (सू- ३९ ष) शौचात्स्वाङ्,जुगुप्सापरैरसंसर्गः (सू- ४० ष)
- अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्। (यो.द.सा.पा.सू.३७-षड्द-पृ १५३)
- सत्य प्रतिष्ठायां सर्वक्रियाफलाश्रयत्वम् (सू- ३६ ष)
- अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः। (सू- ३५ ष)
- सन्तोषादनुतम; सुखलाभः । (सू – ४२ ष)
- द्वन्द्वसहनं तपः ।
- स्वाध्यादिष्ट देवता सम्प्रयोगः। (सू- ४४ ष.द.पृ.१५४)
- ईश्वर प्रणिधानाद् वा। (सू- ४५ ष)
- न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। (ऋग्वेद – ४-३३-११-पृ.६८०) परस्परं भावयन्तः श्रेयःपरमवाप्स्यथ। (गीता – ३ -१२)
- सहनाववतु स नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। (अथर्व का. ३ सू. ३० मं-२ |तै. आरण्यक)
- सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु (अथर्ववेद -कां. १९-१५.६ पृ.१७७)
- वसुधैव कुटुम्बकम। (हितोपदेश)
- मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्स्वसारमुतस्वसा। का.३.३०.-३ पृ. ३२१ (२१) मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। (यजुः ३६-१८)

धर्म का सत्य स्वरुप जानने हेतु जब हम अपने प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद का अवलोकन करते हैं. मानव जीवन में भिन्न भिन्न अवस्थाओमें उस उस अवस्था के उपयुक्त आश्रमों के नियमोंका विधान संस्कारोंकी पावनी परम्परा को और भी पुष्टिप्रदान करता है। जिसें हम दर्शन, नैतिकता,कानून और शासन कहते हैं। वे सभी धर्मकेअभिन्न अंग है । धर्मो रक्षति रक्षितः धर्म की रक्षा में ही हमारी सुरक्षा समाहित है। धर्महीन उच्छृङ्खल जीवन विनाश की और ले जाता है। धर्म जीवन को एक उद्देश प्रदान करता है। एक सुनिश्चित मार्गः दिखाता है जिस पर चलकर मानव अपना आध्यात्मिक आधिदैविक एवं आधिभौतिक विकास कर सकता है। मनुष्य अपने जीवन के त्रिविध तापों को पराभूत करके आनन्द सागर में निमज्जन करता है। पारलौकिक जीवन की स्पृहासे प्रेरित होता है । परलोक की यह अभिलाषा कल्पना की तरङ्ग में बहने वाली कवि की काल्पनिक कृति (रचना) नहीं है वास्तविक जीवन की अनुभूति की अभिव्यक्ति है । वैदिकवाङ्मयस्थ धर्म और दर्शन अभिन्नता के दर्शक हैं। धर्म के साथ अर्थ, काम, और मोक्ष का सम्बन्ध हैं। यही मानव जीवन काअन्तिम लक्ष्यहै। धर्मआदर्शवादी एवं यथार्थवादी है मिथ्या कल्पाना नहीं है ।

धर्म के मौलिक वत्वः

धर्म से मानव जीवन में समरसता, विश्व में शान्ति तथा सद्भाव की स्थापना होसकती है। सभी धर्मों का लक्ष्य मानव कल्याण ही है । धर्म ही अपूर्णताओं, वेदनाओं एवं निरसता से ऊपर उठाता है। धर्म मानव जीवन का आधार है । धर्म विश्वमें एकता सुरक्षाऔर शान्ति की स्थापना करता है। धर्म समाज, राष्ट्र एवं विश्व का संचालक है । मानव में विश्वबन्धुत्व की उदात भावना, प्रेम, सहानुभूति, त्याग ,दया आदि दिव्यगुण जागृत हों यही सब धर्मों का उपदेश है। सच्चा धर्म शत्रुता एव कलह से मुक्ति दिलाता है।

श्रुतिः स्मृति : सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः । सम्यक् संकल्पजं कामो धर्ममूलमिदं स्मृतम् । (याज्ञवल्क्य स्मृति १.७)

निष्कर्षः- जीवन क्षणभंगुर है यह सत्य जानकर क्षण क्षण का विचार करते हुए जितना जीवनमिला है उसे सफल, सार्थक बनाना। सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु की कामना पूर्त्यर्थ सभी के साथ स्वयं मैत्री, करूणा, मुदिता का आचरण करना। इह लौकिक कर्तव्यों की पूर्णता केसाथ पार लौकिक आनन्द अर्थात् मोक्ष को पाने हेतु स्व स्वरूप को जानना। शुद्धोऽस्मि बुद्धोऽस्मि,निरञ्जनोऽस्मि का

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad
Scanned with CamScanner

गान करते हुए पापपंक में न फंसना। मुझे संसार सरोवर मेंकमल की भाँति रहना है यह तथ्य सामने रखकर जीवन यापन करना ही धर्म कास्वरूप है।

सहायकग्रंथसूचिः-

१. ऋग्वेद
२. यजुर्वेद
३. सत्यार्थप्रकाश–महर्षीदयानंद सरस्वती
४. याज्ञवलक्यस्मृती– याज्ञवल्क्या
५. मनुस्मृती– महर्षीमनु
६. आपस्तम्ब-धर्मसुत्र
७. मानवकीसेवामेविश्वकेप्रमुखधर्म– प्रो. सिध्देश्वरभट्ट
आचार्यएवंभूतपूर्वविभागाध्यक्षदर्शनशास्त्रविभागदिल्लीविश्वविद्यालय.

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

Scanned with CamScanner